



संस्कृति और भाषाओं के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

AI IN INDIA
FROM VISION TO IMPACT

09 फरवरी, 2026

प्रमुख विशेषताएं

- भारत भाषिणी, अनुवादिनी, ज्ञान भारतम और आदि वाणी जैसे राष्ट्रीय मंच के ज़रिए संस्कृति और भाषाओं के लिए एआई को संस्थागत बना रहा है।
- एआई का इस्तेमाल पांडुलिपियों के डिजिटाइज़ेशन, शैक्षणिक सामग्री के अनुवाद और आदिवासी और लुप्तप्राय भाषाओं को शामिल करके सांस्कृतिक और ज्ञान संपत्तियों को इस्तेमाल लायक बनाने के लिए किया जा रहा है।
- एआई का इस्तेमाल सांस्कृतिक और रचनात्मक क्षेत्रों को डिजिटल मूल्य श्रृंखला से जोड़ने, कारीगरों को प्लेटफॉर्म और अवसरों से जोड़ने के लिए किया जा रहा है।

सांस्कृतिक संरक्षण से लेकर सांस्कृतिक भागीदारी तक

भारत की सांस्कृतिक विरासत और भाषाई विविधता इसकी सामाजिक पहचान और साझा ज्ञान प्रणालियों को आकार देती है। पांडुलिपियों, स्मारकों, प्रदर्शन कलाओं और शिल्पों से लेकर मौखिक परंपराओं, लोककथाओं और स्वदेशी ज्ञान तक, भारत में संस्कृति कई भाषाओं, लिपियों और बोलचाल के रूपों के माध्यम से बनाई और आगे बढ़ाई जाती है।

जनगणना 2011 के अनुसार, भारत के भाषाई परिदृश्य में 22 अनुसूचित भाषाएँ और 99 गैर-अनुसूचित भाषाएँ शामिल हैं, जो कई भाषा परिवारों में फैली हुई हैं, साथ ही हजारों मातृभाषाएँ और जनजातीय भाषाएँ भी हैं।¹ भारत सरकार ने हमारी भाषाई विरासत और उसमें मौजूद समृद्ध पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित और बढ़ावा देने के लिए लगातार संस्थागत, शैक्षिक और डिजिटल पहल की हैं।

¹ https://language.census.gov.in/eLanguageDivision_VirtualPath/Atlas/pdf/2011.pdf

इस प्रयास के मूल में सांस्कृतिक संसाधनों और पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करने और लोगों को उनकी परिचित और आरामदायक भाषाओं और प्रारूपों में उपलब्ध कराने के लिए एआई सहित उभरती हुई तकनीक का लाभ उठाने पर जोर दिया गया है। इसके लिए प्रौद्योगिकी के लोकतंत्रीकरण की आवश्यकता है। एआई इस प्रक्रिया में एक प्रमुख सहायक के रूप में उभरा है। सांस्कृतिक संपत्तियों के डिजिटलीकरण और खोज का समर्थन करके, बहुभाषी और आवाज-आधारित पहुंच को सक्षम करके, और बड़े पैमाने पर जुड़ाव को सुविधाजनक बनाकर, एआई विरासत और लोगों, परंपरा और प्रौद्योगिकी के बीच की खाई को पाटने में मदद करता है। यह दृष्टिकोण एआई को मानवता के लिए प्रौद्योगिकी के रूप में उपयोग करने की दृष्टि को दर्शाता है, जो "सभी के कल्याण और सभी के लिए खुशी" के लक्ष्य के अनुरूप है।

भाषा को डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के रूप में बनाना

संस्कृति, ज्ञान और पब्लिक सर्विस तक पहुंच बढ़ाने के लिए, भारत सरकार बुनियादी ढांचा आधारित तरीका अपना रही है।

इस भाषा के बुनियादी ढांचे के मुख्य स्तंभों में शामिल हैं:



राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन (एनएलटीएम) - भाषिणी²

राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन के तहत 2022 में शुरू किया गया भाषिणी, डिजिटल स्पेस में भारत की भाषाई विविधता को देखते हुए विकसित किया गया था। इस पहल का केन्द्र सीधे डिजिटल सिस्टम में भाषा और आवाज की क्षमताएं बनाने पर है। यह पब्लिक प्लेटफॉर्म को देश में इस्तेमाल होने वाली अनेक भाषाओं में प्रभावी ढंग से काम करने योग्य बनाती है।

भाषिणी एक साथ तीन प्रमुख बाधाओं को दूर करती है:

- भाषा की बाधा - ऐसी व्यवस्था जो स्थानीय भाषाओं या लहजों को नहीं समझे
- डिजिटल बाधा - जटिल इंटरफ़ेस जो इस्तेमाल को निरुत्साहित करते हैं
- साक्षरता की बाधा- पढ़ने और टाइपिंग पर निर्भरता

पूर्ण प्रशासनिक पहुंच समझी जाने वाली व्यवस्था में भाषिणी बहुभाषी एआई को नेशनल डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर के तौर पर बना रही है। यह भारतीय भाषाओं में अनुवाद, स्पीच-टू-टेक्स्ट, टेक्स्ट-टू-स्पीच, ट्रांसलिटरेशन और डॉक्यूमेंट अंडरस्टैंडिंग जैसी भाषा सेवाएं देती है, जिससे प्लेटफॉर्म बिना कुछ नया बनाए भाषा और वॉयस फीचर्स जोड़ सकते हैं।

भाषिणी पहले से ही बड़े पैमाने पर काम कर रहा है:

- 22 भाषाओं में वॉइस और 36 भाषाओं में टेक्स्ट सर्विस को प्रोत्साहित करता है
- 350 से ज्यादा एआई मॉडल और डेटासेट होस्ट करता है
- अब तक 4 बिलियन से ज्यादा भाषाई परिणाम पूरे कर चुका है।

इसकी ताकत सहयोग में है। रिसर्च संस्थान, भाषा विशेषज्ञ, स्टार्टअप, राज्य सरकारें और इंडस्ट्री पार्टनर मिलकर इस प्लेटफॉर्म में योगदान देते हैं, जिससे यह पक्का होता है कि भाषाई मॉडल असल दुनिया में इस्तेमाल और लोकल भागीदारी से बेहतर हों।

एक बुनियादी भाषा लेयर के तौर पर, भाषिणी भाषाई विविधता को प्रैक्टिकल डिजिटल एक्सेस में बदल देती है, जिससे लोग अपनी समझ की भाषाओं और फॉर्मेट में जानकारी, संस्कृति और पब्लिक सेवाओं से जुड़ पाते हैं।

- भाषिणी के उपयोग के मुख्य उदाहरण

²<https://bhashini.gov.in/>

- काशी तमिल संगमम 2.0³ में वास्तविक समय भाषण अनुवाद:

वाराणसी में काशी तमिल संगमम कार्यक्रम में, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने भाषण के दौरान भाषिनी एआई प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल किया। उनके हिन्दी भाषण का रियल टाइम में तमिल में अनुवाद किया गया ताकि तमिल बोलने वाले लोग भाषण को सीधे अपनी भाषा में समझ सकें, जिससे एक जीवंत सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माहौल में भाषिणी की रियल-टाइम अनुवाद क्षमता दिखाई दी।

- महाकुंभ 2025⁴ में बहुभाषी सहायता:

भाषिणी ने कुंभ सहाएआईयक चैटबॉट को चलाया, जो एक बहुभाषी, आवाज सक्षम है जिसका इस्तेमाल महाकुंभ 2025 में तीर्थयात्रियों को 11 भाषाओं (हिंदी, अंग्रेजी और नौ अन्य) में नौपरिवहन और कार्यक्रम की जानकारी देने के लिए किया गया। यह खोया और पाया जैसी डिजिटल समाधान विशेषताओं में भी सहायक रही, जिसमें रियल-टाइम टेक्स्ट और वॉइस ट्रांसलेशन शामिल था, ताकि अलग-अलग भाषाओं वाले लोगों के लिए कार्यक्रम को ज्यादा सुलभ बनाया जा सके।

एक बुनियादी भाषा इंफ्रास्ट्रक्चर के तौर पर, भाषिणी विविधता को एक्सेस में बदलती है, जिससे लोगों को अपनी भाषाओं और फॉर्मेट में जानकारी, संस्कृति और पब्लिक सेवाओं से जुड़ने में मदद मिलती है - जो समावेशी भागीदारी और सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास (टीडीआईएल)⁵

टीडीआईएल भारत सरकार का एक पुराना कार्यक्रम है जिसने भारतीय भाषा कंप्यूटिंग के लिए बुनियादी टेक्नोलॉजी का आधार तैयार किया, जिसमें कई भारतीय भाषाओं में आलेख, व्याख्यान और विषय शामिल हैं।

- यह प्रमुख भाषा प्रौद्योगिकियों के विकास और मानकीकरण पर ध्यान केन्द्रित करता है, जिसमें शामिल हैं:
 - मशीन अनुवाद
 - भारतीय लिपियों के लिए ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन (ओसीआर)

³<https://indiaai.gov.in/news/pm-modi-used-the-ai-tool-bhashini-while-delivering-his-speech-in-varanasi?utm>

⁴<https://www.pib.gov.in/PressReleaselframePage.aspx?PRID=209333®=3&lang=2>

⁵<https://tdil-dc.in/index.php?lang=en>

- स्पीच-टू-टेक्स्ट और टेक्स्ट-टू-स्पीच प्रणाली
- हेंडराइटिंग की पहचान और ट्रांसलिटरेशन टूल
- टीडीआईएल द्वारा व्यावहारिक उपयोग संभव:
 - साझा भाषाई संसाधन, डेटासेट और स्टैंडर्ड बनाना जिन्हें अलग-अलग प्लेटफॉर्म पर दोबारा इस्तेमाल किया जा सके
 - क्रॉस-लिंगुअल एक्सेस में सहयोग करना, जिससे उपयोगकर्ता अपनी भाषा में जानकारी पा सकें और उससे संवाद कर सकें
 - सभी सिस्टम और उपकरणों में भारतीय भाषाओं का एक जैसा डिजिटल रिप्रेजेंटेशन पक्का करना
- टीडीआईएल-सपोर्टड सिस्टम, जैसे कि भारतीय भाषा के मशीन ट्रांसलेशन टूल, ने गवर्नेंस, शिक्षा और सूचना के प्रसार में मल्टीलिंगुअल एक्सेस के शुरुआती असल दुनिया के एप्लीकेशन दिखाए।

एक बुनियादी भाषा टेक्नोलॉजी कार्यक्रम के तौर पर, टीडीआईएल ने भारत को भाषा रिसर्च से स्केलेबल भाषा इंफ्रास्ट्रक्चर में बदलने में मदद की, और आखिरकार भाषिणी जैसे प्लेटफॉर्म को सीधे सपोर्ट किया और डिजिटल, कल्चरल और नॉलेज इकोसिस्टम तक सबको साथ लेकर चलने वाली पहुँच को मजबूत किया।

अनुवादिनी (एआईसीटीई)

अनुवादिनी एक एआई आधारित बहुभाषी अनुवाद प्लेटफॉर्म है जिसे ऑल इंडिया काउंसिल फॉर टेक्निकल एजुकेशन (एआईसीटीई) ने बनाया है। इससे बड़े पैमाने पर शैक्षणिक, तकनीकी और ज्ञान सामग्री का भारतीय भाषाओं में अनुवाद किया जा सकता है।

- यह व्यावहारिक भाषा पहुँच का समर्थन करता है:
 - पाठ्य पुस्तकों, संदर्भ सामग्री और अध्ययन संसाधनों का एआई सक्षम अनुवाद
 - मल्टीमॉडल क्षमताएं, जिसमें विषय, दस्तावेज और व्याख्यान आधारित अनुवाद शामिल हैं
 - ई-कुंभ जैसी नेशनल रिपॉजिटरी के साथ इंटीग्रेशन, जिससे बड़े पैमाने पर ट्रांसलेट किए गए कंटेंट तक एक्सेस मिल सके
- अनुवादिनी व्यावहारिक उपयोग के मामलों को सक्षम बनाती है जैसे:

- क्षेत्रीय भाषाओं में छात्रों के लिए उच्च शिक्षा और तकनीकी जानकारी तक पहुँच बढ़ाना
- स्थानीय भाषाओं में अध्ययन संसाधन उपलब्ध कराकर स्किलिंग और कैपेसिटी बिल्डिंग में मदद करना
- सिर्फ कम्युनिकेशन ही नहीं, बल्कि नॉलेज के माध्यम के तौर पर भारतीय भाषाओं को मज़बूत करना

एआई से चलने वाले भाषा पहुँच प्लेटफॉर्म के तौर पर, अनुवादिनी भारतीय भाषाओं में जान और स्किल्स तक पहुँच बढ़ाता है। एजुकेशन, स्किलिंग और कल्चरल नॉलेज सिस्टम में भागीदारी को आसान बनाकर, यह सोशल एम्पावरमेंट और रोजी-रोटी के मौकों में योगदान देता है।

सांस्कृतिक विरासत, ज्ञान प्रणालियों और भाषाई विविधता के लिए एआई

भारत की विशाल सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखने के साथ-साथ लोगों की ज्यादा पहुँच और भागीदारी को आसान बनाने के लिए, भारत सरकार विरासत के संरक्षण, पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों और भाषाई विविधता में एआई का इस्तेमाल कर रही है, जिसका ध्यान मुख्य रूप से स्केल, खोज और समावेश पर है।

ज्ञान भारतम मिशन⁶

भारत की पांडुलिपि विरासत और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के सर्वेक्षण, दस्तावेजीकरण, डिजिटलीकरण और प्रसार के लिए यह एक राष्ट्रीय मिशन है, जिसमें एक राष्ट्रीय डिजिटल रिपॉजिटरी का निर्माण भी शामिल है।

- एआई-सक्षम उपकरणों का लाभ उठाता है जैसे:
 - हाथ से लिखी गई पुरानी पुस्तक को पहचानने के लिए (एचटीआर) और ओसीआर
 - लिपियों और भाषाओं में मेटाडेटा एक्सट्रैक्शन और इंटेलिजेंट कैटलॉगिंग
 - डिजिटाइज़ड हेरिटेज कंटेंट की बेहतर खोज और एक्सेस
- प्रमुख उपलब्धियों में शामिल हैं⁷:
 - कृति संपदा डिजिटल रिपॉजिटरी में 44 लाख से ज्यादा मैन्युस्क्रिप्ट्स डॉक्यूमेंट हैं

⁶<https://gyanbharatam.com/>

⁷<https://www.pib.gov.in/PressNoteDetails.aspx?NoteId=155185&ModuleId=3®=3&lang=2>

- डिजिटाइजेशन और एक्सेस को बढ़ाने के लिए ₹482.85 करोड़ (2024-31) के खर्च के साथ मिशन को मंजूरी दी गई

यह मिशन यह पक्का करेगा कि सांस्कृतिक विरासत की संग्रहीत फाइलों से साझा डिजिटल तक पहुंच हो, जिससे लंबे समय तक उन्हें बचाया जा सके और लोगों की भागीदारी बढ़े।

ज्ञान-सेतु (ज्ञान भारतम के तहत राष्ट्रीय एआई नवाचार चुनौती⁸

ज्ञान-सेतु को मैन्युस्क्रिप्ट को सुरक्षित रखने, समझने, ठीक करने और पहुंच के लिए एआई वाले समाधान पाने के लिए एक राष्ट्रीय चुनौती के तौर पर शुरू किया गया था।

- व्यावहारिक एआई उपयोग मामलों पर ध्यान केन्द्रित किया गया, जिसमें शामिल हैं :

 - कैटलॉगिंग और डेटासेट सृजन
 - डिजिटलीकरण और पुरालेखण
 - स्क्रिप्ट विवरण और ज्ञान सामग्री का प्रसार

- प्रमुख परिणामों में शामिल हैं:

 - हेरिटेज एप्लीकेशन के लिए पहचाने गए पुरस्कार प्राप्त एआई प्रोटोटाइप के साथ नेशनल चैलेंज को सफलतापूर्वक पूरा करना

इस पहल ने लगाए जा सकने वाले एआई सॉल्यूशंस की एक पाइपलाइन बनाई, जिससे सांस्कृतिक संस्थानों और एआई इकोसिस्टम के बीच सहयोग मजबूत हुआ।

आदि वाणी - जनजातीय भाषाओं के लिए एआई प्लेटफॉर्म⁹

आदि वाणी एक एआई-आधारित प्लेटफॉर्म है जो आदिवासी भाषाओं के संरक्षण, प्रचार और फिर से ज़िंदा करने के लिए है, जो भारत की सांस्कृतिक और मौखिक विरासत का केन्द्र हैं।

- के माध्यम से व्यावहारिक उपयोग को सक्षम बनाता है:

 - हिंदी, अंग्रेजी और आदिवासी भाषाओं के बीच रियल-टाइम ट्रांसलेशन
 - मौखिक भाषाओं के लिए स्पीच-ट्रॉटेक्स्ट ट्रांसक्रिप्शन

⁸<https://www.gbm-moc.in/gyansetu>

⁹<https://adivaani.tribal.gov.in/>

- युवा पीढ़ी के लिए भाषा सीखने के मॉड्यूल
- लोककथाओं, ओरल हिस्ट्री और कम्युनिटी नैरेटिव का डिजिटाइज़ेशन
- प्रमुख उपलब्धियाँ (बीटा चरण¹⁰):

 - शुरुआत में संथाली, भीली, मुंडारी और गोंडी जैसी आदिवासी भाषाएँ शामिल होंगी, और इसे बढ़ाने का काम चल रहा है
 - आदिवासी भाषाओं में सलाह और सार्वजनिक संदेश के लिखित भाषांतर के लिए प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल

- डिजिटल, शैक्षणिक और सार्वजनिक संचार के क्षेत्रों में जनजातीय भाषाओं को लाकर समावेशन को मजबूत करना

एआई के ज़रिए भागीदारी और अवसर को सक्षम बनाना¹¹

जैसे-जैसे एआई संस्कृति, भाषा और जान तक पहुंच को बेहतर बनाता है, अगला कदम इस पहुंच को आर्थिक मौके और सामाजिक मजबूती में बदलना है। यह भारत के सांस्कृतिक और सृजनात्मक क्षेत्र के लिए खास तौर पर ज़रूरी है, जहां पारंपरिक स्किल, लोकल जान और कम्युनिटी पर आधारित तरीकों पर रोज़ी-रोटी निर्भर करती है।

कारीगर, शिल्पकार और सांस्कृतिक लोग भारत की अनौपचारिक और सृजनात्मक अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा हैं। जब एआई को समावेशी और स्थानीय संदर्भ के प्रति संवेदनशील



¹⁰https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2162846&utm_reg=3&lang=2

¹¹https://niti.gov.in/sites/default/files/2025-10/Roadmap_On_AI_for_Inclusive_Societal_Development.pdf

बनाया जाता है, तो यह डिजिटल बाजारों में विजिबिलिटी, प्रोडक्टिविटी, स्किल और भागीदारी को बेहतर बनाकर इन आजीविकाओं को सहायता कर सकता है—साथ ही सांस्कृतिक पहचान को भी बनाए रख सकता है।

कारीगरों और सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं के लिए एआई-सक्षम रास्ते

- भाषा-समावेशी प्लेटफॉर्म के माध्यम से बेहतर बाजार पहुँच
 - एआई-आधारित अनुवाद और डिस्कवरी ट्रूल कारीगरों को अलग-अलग भाषाओं और इलाकों में अपने उत्पाद, कहानियाँ और सांस्कृतिक मूल्यों को दिखाने में मदद करते हैं।
 - अनेक भाषाओं वाले कैटलॉग और इंटरफेस बिचौलियों पर निर्भरता कम करते हैं और बड़े मार्केट तक पहुँच बढ़ाते हैं।
- आवाज़-प्रथम और समावेशी डिजिटल जुड़ाव
 - वॉइस-इनेबल्ड इंटरफेस कम पढ़े-लिखे या डिजिटल जानकारी रखने वाले कारीगरों को अपनी भाषा में प्लेटफॉर्म, ट्रेनिंग मॉड्यूल और सर्विस एक्सेस करने की सुविधा देते हैं।
 - ऐसे इंटरफेस डिजिटल सिस्टम में ज़्यादा लोगों को शामिल होने में मदद करते हैं।
- कौशल, उत्पादकता और उद्यम सहयोग
 - एआई सक्षम सीखने वाले उपकरण क्वालिटी सुधार, डिजिटल मार्केटिंग, कीमतों और इन्वेंट्री मैनेजमेंट जैसे एरिया में ऑन-डिमांड ट्रेनिंग दे सकते हैं।
 - डेटा-बेस्ड इनसाइट्स कारीगरों को उत्पाद योजना बनाने, मांग प्रबंध करने और दक्षता सुधारने में मदद करते हैं।
- विश्वास, उत्पत्ति और सांस्कृतिक प्रामाणिकता
 - एआई-सहायता प्राप्त दस्तावेज और टैगिंग सिस्टम हेरिटेज और जीआई-टैग्ड प्रोडक्ट्स के लिए ऑथेंटिसिटी बनाने और भरोसा बनाने में मदद करते हैं।
 - स्पष्ट और पारदर्शी डिजिटल प्रतिनिधित्व उपभोक्ता का भरोसा बढ़ाता है और सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा करता है।

एआई सिस्टम में भाषा की पहुँच, आवाज़ पर आधारित ट्रूल और सांस्कृतिक समझ बनाकर, कारीगर और सांस्कृतिक कार्यकर्ता सिर्फ़ फ़ायदेमंद ही नहीं, बल्कि टेक्नोलॉजी के सक्रिय उपयोगकर्ता बन जाते हैं। इस

तरह, एआई काम की इज़ज़त, टिकाऊ रोज़ी-रोटी और भारत की सांस्कृतिक और सृजनात्मक परंपराओं को मज़बूत करके सामाजिक सशक्तिकरण में मदद करता है।

संस्कृति, भाषाओं और आजीविका के लिए समावेशी एआई को आगे बढ़ाना

जैसे-जैसे भारत सार्वजनिक प्रणाली में एआई का इस्तेमाल बढ़ा रहा है, इसका मुख्य मकसद यह पक्का करना है कि टेक्नोलॉजी से सांस्कृतिक भागीदारी, सामाजिक अधिकारिता और रोज़ी-रोटी की स्थिरता बढ़े। हाल की पॉलिसी सोच, जिसमें एआई फॉर इनकलूसिव सोसाइटल डेवलपमेंट पर नीति आयोग की रिपोर्ट भी शामिल है, पब्लिक स्पेस में एआई के बेहतर इस्तेमाल के लिए इन खास बातों की ओर इशारा करती है।¹²:

- सत्यापित किए जा सकने वाले डिजिटल क्रेडेंशियल के ज़रिए भरोसा बनाना, जिससे ट्रेनिंग प्रोवाइडर, एम्प्लॉयर, प्लेटफॉर्म और सरकारी संस्थाएँ भरोसेमंद काम और स्किल सर्टिफ़िकेट जारी कर सकें, जिन्हें सभी सिस्टम में आसानी से सत्यापित किया जा सके।
- भाषा-आधारित एआई टूल को बढ़ाकर और ऑफ़लाइन और खराब इंटरनेट एक्सेस वाले इलाकों में काम करने वाली एआई प्रणाली को सहयोग देकर एआई बुनियादी ढांचे को मज़बूत करना।
- राज्य और ज़िला कार्यक्रम को सहायता देकर, स्थानीय सुविधाओं को डिजिटल कार्य केन्द्र के तौर पर इस्तेमाल करके, और डिजिटल स्किल और अपनाने को बेहतर बनाने के लिए सामुदायिक संगठन के साथ काम करके स्थानीय स्तर पर नवोन्मेष को बढ़ावा देना।
- सरकार, टेक्नोलॉजी प्रदाता, शिक्षक, औद्योगिक संस्थाओं और सिविल सोसाइटी को एक साथ लाकर बहु-साझेदार सहयोग को बढ़ावा देना, ताकि समन्वित और स्थायी तरीके से समावेशी एआई समाधान बढ़ाया जा सके।

ये कोशिशें एआई को सिर्फ़ एक टेक्नोलॉजिकल टूल के तौर पर ही नहीं, बल्कि एक सार्वजनिक वस्तु के तौर पर भी पेश करेंगी जो भारत की सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को दिखाता है। यह मानव-केन्द्रित दृष्टिकोण इंसानियत के लिए टेक्नोलॉजी के विचार को मज़बूत करता है—एआई जो लोगों की ज़िंदगी की असलियत को सुनता, समझता और उस पर प्रतिक्रिया देता है। एआई के इस्तेमाल को समावेशी, भागीदारी वाला और अवसर से जोड़कर, भारत यह सुनिश्चित कर सकता है कि उसकी सांस्कृतिक विरासत और सृजनात्मक कम्युनिटी डिजिटल रूप से मज़बूत और सामाजिक रूप से समावेशी भविष्य में सक्रिय योगदानकर्ता बनी रहे।

¹² https://niti.gov.in/sites/default/files/2025-10/Roadmap_On_AI_for_Inclusive_Societal_Development.pdf

पीआईबी शोध इकाई

पीके/केसी/केपी